REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

अलाउद्दीन ख़िलजी के शासन काल में मलिक काफूर का द्वितीय देवगिरी अभियान : एक संक्षिप्त ऐतिहासिक अवलोकन

डॉ. नीरज कुमार गौड़

सारांश

अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में मलिक काफूर उस दैदीप्यमान सितारे की तरह है जिसने अपनी प्रतिभा एवम् लगन के आधार पर साधारण से असाधारण पहिचान स्थापित कर अपने को श्रेष्ठ सेनानायकों की श्रेणी में स्थापित किया। उसने अपना प्रारम्भिक जीवन साधारण गुलाम (दास) से प्रारम्भ कर, असाधारण रूप से मलिक नायब के पद पर आसीन होकर, अलाउद्दीन के प्रथम एवं द्वितीय दक्षिण अभियानों का सेनापतित्व प्राप्त कर अपने को उच्च पद एवम् प्रतिष्ठा पर स्थापित किया।

जीवन परिचय–

खिलजी कालीन इतिहास में अलाउद्दीन के वर्चस्व के कुछ प्रमुख आधार स्तम्भ थे। वह स्वयं अनुभव किया करता था कि पैगम्बर की भाँति उसके पास भी चार अति सक्षम और प्रतिभा सम्पन्न सहयोगी जफर खाँ, उलुग खाँ, नुसरत खाँ और अलप खाँ हैं,[1] लेकिन अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी श्रेष्ठता और राजतन्त्र की पराकाष्ठा अर्जित करने का एकमात्र आधार मलिक काफूर था, जिसकी अभूतपूर्व क्षमता ने खिलजी साम्राज्यवाद के प्रसार को सुदूर दक्षिण तक पहुँचा दिया। उत्तर पश्चिमी सीमा तक मंगोलों के आक्रमणों के निरन्तर प्रहारों से मंगोल नेता कुबक के विरूद्ध प्रदर्शित किये दूरसाहसी पराक्रम ने उनके हौंसले इस सीमा तक पस्त कर दिये कि उनका हिन्दुस्तान की और दबाव निरन्तर कम हो गया।

काफूर गुजरात का निवासी था।[2] इतिहास में उन परिस्थितियों की कोई प्रमाणिक जानकारी नही है, जिनके आधर पर यह ज्ञात हो सके कि उसे कब और कैसे क्रय करके गुलाम बनाया गया। वह हिन्दू था यह प्रमाणिक तथ्य है।[3] यह भी इतिहास में सुनिश्चित तथ्य है उसे खम्मात के एक सौदागर ने एक हजार दीनार देकर से खरीदा था।[4] यही कारण है कि उसका नाम भी हजार दीनारी लोकप्रिय हो गया था।[5]

खम्मात के सौदागर ख्वाजा के यहाँ आने पूर्व वह स्वतन्त्र नागरिक था परन्तु क्रय किये जाने के बाद वह अपने स्वामी का दास हो गया, क्योकि ख्वाजा मुसलमान था इसलिये गुलाम की हैसियत से उसका धर्मान्तरण हो गया और वह एक दास मुसलमान माना गया।[6] यह अत्यधिक सुन्दर व बुद्धिमान भी था।

जब 1299 ई0 में अलाउद्दीन के आदेश से गुजरात विजय के अभियान पर नुसरत खाँ को भेजा गया, तो इस अभियान के मध्य लूट मार के अवसर पर नुसरत खाँ ने काफूर को इस सौदागर के हाथों से बलात छीन लिया। लूट के माल के साथ इसे भी नुसरत खाँ ने अलाउद्दीन के पास भेंट की सामग्री के रूप में देहली भेज दिया।[7] काफूर ने अपनी असाधारण प्रतिभा और व्यक्तित्व से सल्तान को सम्मोहित कर लिया। अलाउद्दीन ने उसे क्रमशः अपना विशेष व प्रिय कृपा पात्र ही बना लिया, वह काफूर की योगता व सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि दस वर्ष के अंदर ही काफूर एक के बाद अनेकों पद, सम्मान और खिताब प्राप्त करते हुये साम्राज्य में अति विशिष्ट अधिकारी बना दिया गया। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसे **मलिक – ताज – उल – मुल्क** कीउपाधि से सम्मानित किया। उसने उसे फिर नायक का पद प्रदान किया तदुपरान्त मलिक नायब काफूर को लाल छत्र प्रदान

किया।[8]सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक काफूर को लाल छत्र व दूरवास भी प्रदान किया और उसके उपयोग करने का अधिकार भी दिया।[9]

शाहीन के पृथक हो जाने के बाद भी अलाउद्दीन ने काफूर को उन्नति प्रदान की और उसे मलिक नायब बनाया था।[10]मलिक काफूर अलाउद्दीन के लिये शाहीन से भी कहीं अधिक विश्वसनीय व निष्ठावान सिद्ध हुआ, उसने अलाउद्दीन के लिये वही कार्य किया जो ऐबक व इख्तियारूद्दीन ने मौहम्मद गौरी के लिये कार्य किया था।

मंगोल आक्रमणकारी कुबक के विरूद्ध मलिक काफूर ने अद्वितीय वीरता का परिचय दिया था। यह युद्ध सम्भवतः 1306 ई0 में हुआ था।[11] अलाउद्दीन खिलजी ने प्रथम दक्षिण अभियान की अभूतपूर्व सफलता के पश्चात मलिक काफूर को पुनः दक्षिण अभियान के लिये सेनापति नियुक्त किया।

मलिक काफूर का द्वितीय देवगिरी अभियान–

1312–13 ई0 में मलिक काफूर को पुनः दक्षिण जाने के लिये नियुक्त किया गया।[12] क्योंकि सुल्तान अलाउद्दीन को एक यात्री द्वारा यह सूचना मिली कि बादशाह के हितेषी रामदेव की मृत्यु हो गयी है[13] और उसके स्थान पर उसका पुत्र उत्तराधिकारी हुआ है। जब से तुर्कों ने दक्षिण में प्रवेश किया था तभी से सिंघन उनका घोर शत्रु रहा। 1296 ई0 में पिता के अपमानजनक समर्पण के पश्चात् उसका दूसरा अपमान यह हुआ कि उसकी मंगेतर देवलरानी उससे छीन ली गयी। इस अपमान ने आग में घी का कार्य किया और सिंहन के हृदय में शत्रुता की आग पुनः प्रज्वलित हो गयी[14]। उसे इतना अधिक रोष था कि यदि इसामी पर विश्वास किया जाये, दिल्ली शासन के विरूद्ध खुली शत्रुता अपनाने से सिंहन को रोकने हेतु रामचन्द्र को अलाउद्दीन से सहायता मॉगने के लिये बाध्य होना पड़ा।[15] 1312 या 1313 में पिता की मृत्यु के पश्चात् गद्दी बैठते ही तुर्कों की आधीनता के सारे लक्षण समाप्त कर दिये और वह स्वतंत्र शासक के समान शासन करने लगा।[16] इसी समय तेलंगाना के राजा प्रताप रूद्रदेव ने अत्यधिक भय के कारण या अपना वायदा पूरा करने के लिये अलाउद्दीन के पास 20 हाथी और इस आशय का एक पत्र भेजा कि अपने वायदे के अनुसार वह सम्राट द्वारा नियुक्त किसी भी व्यक्ति को वार्षिक चुकाने को तैयार है।[17]

फरिश्ता के अनुसार मलिक नायब काफूर, मलिक–ए–जहान और उसके पुत्र खिज्रखान से डरता था और उनसे शत्रुता भी रखता था, उसने सुल्तान से आग्रह किया कि वह उसे (काफूर को) कर वसूलने के लिये दक्षिण भेज दें। उसने दुर्विनित सिंहन को दण्डित करने और दक्षिण को विद्रोही तत्वों से मुक्त करने का वायदा किया।[18] अलाउद्दीन ने प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया और दुर्विनीय यादव राजा को कुचलने के पश्चात् देवगिरी पर शासन करने के लिये मलिक नायब को नियुक्त कर दिया[19] और अलाउद्दीन ने कहा वहॉ एक जुमा मस्जिद का निर्माण करा दे और इस्लाम का प्रचार करे।[20] पुनः एक बार मलिक काफूर आस–पास जिस किसी राजा ने सर उठाया कुचलते हुये दक्षिण की ओर चला। पहले वह देवगिरी गया और सिंघन से युद्धरत हो गया। वीर मराठा जो जीवन पर्यन्त दिल्ली का अधिपत्य मानने के विरूद्ध रहा सिंघन के आक्रमण की प्रबलता के सामने न ठहर सका और युद्ध में मारा गया[21]इसामी का कथन है सिंघन के विनाश की योजनाये काफूर बनाने लगा, सिंघन यह सूचना पाकर भाग गया मलिक नायब ने तुरंत देवगिरी पहुॅचकर किले पर अधिकार जमा लिया यह स्वयं ही सन्देहास्पद प्रतीत होता है।[22] क्योंकि जब तक मलिक काफूर दक्षिण में रहा सिंघन का नहीं बल्कि रामदेव के जामाता हरपाल देव का देवगिरि क शासन के रूप में उल्लेख किया गया है।[23] मलिक काफूर ने देवगिरि को सुव्यवस्थित कर देने के उपरान्त उसने विरोधी इक्ताओं के स्वामियों पर आक्रमण किया।[24] इसी बीच में कूमटा सरदार ने विद्रोह कर दिया, मलिक नायब ने उसे परास्त करके अपने राज्य (देवगिरि) में वापिस आ गया। देवगिरि में मलिक काफूर ने मंदिरों के स्थान पर मस्जिद बनवाई।[25] यादव प्रदेशों के पुनः अधिकृत करने के पश्चात् मलिक नायब ने तेलंगाना और होयसल राज्यों के आस–पास कुछ अन्य नगरों पर धावा मारा और दक्षिण के निवासियों के हृदय में ऐस आतंक कर दिया कि दिल्ली के शासन के प्रतिरोध के अन्तिम अवशेष भी समाप्त हो गये। मलिक काफूर देवगिरि वापिस लौटा और उसने वहॉ अपना मुख्यालय स्थापित कर लिया। उसकी निष्ठा और शक्ति का प्रभाव सुल्तान की मृत्यु बाद तक बना रहा।[26] मलिक नायब ने तेलंगाना और कर्नाटका रियासतों से कुछ वर्षों का कर राजधानी भेजा। वह लगभग 1314 ई0 तक दक्षिण में रहा, क्योंकि इसी वर्ष अलाउद्दीन गम्भीर रूप से रोगग्रस्त हो गया था, और उसने उसे देहली वापिस बुला लिया।[27] इसामी ने

जो उन थोड़े लोगों से मिला होगा जिन्होंने काफूर का शासनकाल देखा था उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है। काफूर की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह मराठा सरदारों को किस प्रकार अपने अनुकूल बनावे और वह इस कार्य में सफल हुआ। कंपिला में एक सप्ताह निवास करने के अतिरिक्त साधारणतया काफूर देवगिरि में ही रहता था।[28] मलिक काफूर की इच्छा थी कि वह दिल्ली न जाकर दक्षिण में ही ठहरे और अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद वहॉ स्वतंत्र शासन स्थापित कर ले। इसका प्रधान कारण यह था कि मलिक–ए–जहा, राजकुमार खिज्र खॉ तथा गुजरात के राज्यपाल अल्प खॉ से उसका मनमुटाव हो गया था और वह जानता था कि अलाउद्दीन के बाद जब खिज्र खॉ का शासन होगा तब उसकी जान बचाना कठिन होगा।[29]

अन्ततःमलिक काफूर के विभिन्न अभियानों ने कुछ समय के लिये दक्षिण भारत प्रायद्वीप की शान्ति नष्ट कर दी। दक्षिण के समग्र राज्य यादव, काकतीय होयसल, पाण्डय राजवंश उसके आघातों के शिकार हुये थे।

सन्दर्भ

1. दिल्ली सुल्तनत : मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0–350
2. तारीख–ए–फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0–240
3. –वही–
4. भारतीय इतिहास का मुस्लिम युग : एस0एल0 सीकरी, पृ0 – 154
5. दिल्ली सुल्तनत : मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 – 350
6. तारीख–ए–फिरोजशाही : बरनी पृ0–240
   "गुजरात के ख्वाजा के यहॉ अपने धर्मातंरण से पहले नौकरी करता था"
7. भारत में मुस्लिम शासक का इतिहासः एस0आर0 शर्मा, पृ0–94
8. तारीख–ए–फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0–320
9. नो बिलिटी अन्ड़र दी सुल्तानस : एस0वी0पी0 निगम, पृ0 – 92
10. फुतूहु–उस–सलातीन :इसामी, पृ0 –281–82
11. वही, पृ0–331
12. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 199।
13. फुतूहु–उस–सलातीन, अनु0 सै0अ0अ0 रिजवी, पृ0 206।
14. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 200।
15. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0 274।
16. पूर्व मध्यकालीन भारत, अवध बिहारी पाण्डेय, पृ0 150।
17. फरिश्ता, पृ0 122 (बरनी, पृ0 334 मील)।
18. तारीखे–ए–फश्ता, फरिता, पृ0 122।
19. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0 326।
20. फुतूहु–उस–सलातीन, अनु0, सौ0अ0अ0 रिजवी, पृ0 206।
21. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 200।
22. फुतूहु–उस–सलातीन, ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी, पृ0 334।
23. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 200।
24. फुतूहु–उस–सलातीन, अनु0, सौ0अ0अ0 रिजवी, पृ0 206।
25. फुतूहु–उस–सलातीन, अनु0, अब्दुल्ला मलिक इसामी, पृ0 334–345।
26. अलाउददीन देवगिरी का उस समय पूर्ण अधिपति था यह शिलालेख इन्डो मुस्लमिक, 1927–28, पृ0 16–17 में प्रकाशित और अनूदित किया गया है।
27. जियाउद्दीन बरनी, पृ0 368।
28. दिल्ली सुल्तनत : मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी, पृ0 – 349।
29. पूर्व मध्यकालीन भारत, अवध बिहारी पाण्डेय, पृ0 161।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तरीख–ए–फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनु0 अतहर अब्बास–रिजवी।
2. देवलरानी–खिज्रखाँ : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी, अनु0–मौ0 मेंहदी हुसेन।
3. फुतूहु–उस–सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी, अनु0–मौ0 मेंहदी हुसेन।
4. तारीख–ए–मुबारकशाही : याहिया सर हिन्दी, अनु0–के0के0 बसु।
5. काम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डियाः सर बुल्जले हेग, तृतीय खण्ड़ 1928।
6. नोबिलिटी अण्डर दी सुल्तानस :एस0वी0पी0 निगम।
7. हिस्ट्री आफ पर्शिया : साइक्स दृतीय।
8. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीबएवंम् खलिक अहमद निजामी।
9. भारतीय इतिहास का मुस्लिम युगःएस0एल0सीकरी।
10. भारत में मुस्लिम शासक का इतिहास :एस0आर0शर्मा।
11. खिलजी वंश का इतिहास :के0एस0लाल।
12. पूर्व मध्यकालीन भारत : अवध बिहारी पाण्डेय।

डॉ. नीरज कुमार गौड़